Timax®

अलंकार

हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

NEP 2020
ENHANCED EDITION

7

अलंकार हिंदी व्याकरण-7

अभ्यास–1. भाषा और व्याकरण

1. (क) बोली (ख) हिंदी (ग) गुरुमुखी (घ) अंग्रेज़ी **2.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗ **3.** (क) विस्तृत (ख) प्रदेश (ग) दाईं, बाईं, (घ) व्याकरण (ङ) लिपि **4. भाषा**–संस्कृत, बांग्ला, उर्दू, हिंदी, फारसी, पंजाबी; **लिपि**– गुरुमुखी, देवनागरी **5.** असमी, नेपाली, उड़िया, उर्दू, हिंदी, पंजाबी, गुजराती, मलयालम **6. (क)** जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने मन के भावों अथवा विचारों को स्पष्ट रूप से दूसरों के सामने प्रकट करता है तथा दूसरों के भावों अथवा विचारों को स्वयं समझता तथा ग्रहण करता है, उसे भाषा कहते हैं। **(ख)** भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। **(ग)** भाषा के वर्णों को चिह्नों के रूप में लिखने की विधि लिपि कहलाती है। **(घ)** व्याकरण वह शास्त्र है, जो हमें किसी भाषा की शुद्धता के नियम सिखाता है। व्याकरण से हम भाषा को शुद्ध बोलना, लिखना और पढ़ना सीखते हैं।

अभ्यास–2. वर्ण और वर्णमाला

1. (क) वर्ण (ख) स्वर (ग) ऑ **2.** (क) अ (ख) ढ़ (ग) स (घ) व **3.** (क) रमा (ख) दीपा (ग) कर्म (घ) काला **4.** (क) क् + ष (ख) त् + र (ग) ज् + ञ **5.** (क) सामाजिक (ख) आशीर्वाद (ग) कार्यक्रम **6. परीक्षा**–प्+अ+र्+ई+क्+श्+आ, **हिंदी**–ह्+इ+न्+द्+ई, **श्याम**–श्+य्+आ+म्+अ, **दिल्ली**–द्+इ+ल्+ल्+ई, **शिक्षित**–श्+इ+क्+ष्+इ+त्+अ **राष्ट्रीय**–र्+आ+ष्+ट्+र्+ई+य्+अ **7. (क)** भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि, जिसके टुकड़े न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं। **(ख)** जब भी हम कुछ बोलते हैं, हमें ध्वनियाँ सुनाई देती हैं। ये ध्वनियों ही वर्ण कहलाती हैं। ये उन्हीं शब्दों की ध्वनियाँ होती हैं, जिन्हें हम बोलते हैं; जैसे–रवि जूते पहनो। **(ग)** **स्वर**–जिन ध्वनियों को बोलते समय हमारी साँस बिना किसी रुकावट के बाहर निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं। देवनागरी लिपि में मूल रूप से ग्यारह स्वर हैं– अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ **व्यंजन**–जो ध्वनियाँ मुख के किसी भाग से टकराकर बाहर आती हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों का उच्चारण स्वर की सहायता से ही होता है। उदाहरण के लिए, 'क्' का अलग से उच्चारण नहीं हो सकता। इसका उच्चारण करने के लिए इसके साथ अ, आ, इ आदि कोई स्वर बोलना आवश्यक है। तभी हम क, का, कि आदि बोल सकते हैं। **(घ)** वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। **(ङ)** शब्दों में आए वर्णों के सही क्रम को वर्तनी कहते हैं। **(च)** शब्द के

प्रत्येक स्वर और व्यंजन को क्रम के अनुसार अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

अभ्यास–3 संधि

1. (क) सत् + आचार (ख) उत् + ज्वल (ग) वधू + उत्सव (घ) पो + अक **2.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ **3.** (क) संधि (ख) व्यंजन, विसर्ग (ग) व्यंजन, व्यंजन (घ) मेल (ङ) औ **4.** (क) राम+अवतार (ख) गुरू+उपदेश (ग) महा+ऐश्वर्य (घ) ने+अन (ङ) सु+आगत (च) क्रम+अनुसार **5. संधि–**(क) महात्मा (ख) जगदीश (ग) निर्जन (घ) नदीश (ङ) हरीश (च) मानूदय (छ) मात्राप्रदेश (ज) गायक (झ) जलौश्र्य **संधि का नाम–**(क) दीर्घ (ख) व्यंजन (ग) विसर्ग (घ) दीर्घ (ङ) दीर्घ (च) दीर्घ (छ) यण (ज) अयादि (झ) वृद्धि **6. (क)** संधि का अर्थ है–मेल या जोड़। दो वर्णों के आपस में मिलने से उनके मूल रूप में जो परिवर्तन या विकार आ जाता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे–
शिव+आलय=शिवालय; विद्या+आलय=विद्यालय; महा + ऋर्षि=महर्षि
(अ+आ=आ) (आ+आ=आ) (आ+ऋ=अर्)
(ख) संधि के तीन भेद हैं– 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि **(ग) स्वर संधि–**जब स्वर का मेल स्वर के साथ होता है; तो स्वर संधि होती है, जैसे–लघु+उत्तर = लघूत्तर, रमा+ईश = रमेश, राम+अवतार = रामावतार, मधु+अरि = माधुरी। स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है–1. दीर्घ संधि 2. गुण संधि 3. वृद्धि संधि 4. यण् संधि 5. अयादि संधि **व्यंजन संधि–**व्यंजन का व्यंजन से या किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहा जाता है; जैसे–
सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज – व्यंजन + व्यंजन)
जगत् + ईश = जगदीश (त् + ई = दी – व्यंजन + स्वर)

अभ्यास–4 शब्द-विचार

1. (क) पद (ख) हाथ (ग) अरबी (घ) योगरूढ़ **2.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗ **3.** (क) स्वतंत्र (ख) तत्सम (ग) तत्सम (घ) विकारी (ङ) विकारी **4.** (क) बाग, नमक, स्कूल (ख) बेटा, झुग्गी, पगड़ी (ग) जलज, चारपाई, लंबोदर (घ) हिमालय, विज्ञान, बैलगाड़ी **5.** हाथ, हंसी, कछुआ, मोर, सावन, चाँद, कौआ, नींद, आँख, घोड़ा, घर, भाई बाघ, कबूतर **6. (क)** सार्थक वर्ण-समूह को शब्द कहते हैं। **(ख)** वाक्य में प्रयोग किए जाने पर शब्द पद कहलाता है। **(ग) देशज शब्द–**हिंदी में प्रचलित वे शब्द, जो देश की विभिन्न बोलियों द्वारा हिंदी

भाषा में स्थान पा गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं; जैसे– बेटा, झुग्गी, पगड़ी, डिबिया, रोटी, बाप, लड़का, गाय आदि। **विदेशी शब्द**–जो शब्द संसार की विभिन्न भाषाओं से हिंदी भाषा में आ गए हैं तथा हिंदी भाषा ने थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ उन्हें अपना लिया है, वे विदेशी शब्द या आगत शब्द कहलाते हैं; जैसे-बाग, नमक, स्कूल, कोट, पेन, चाय, आलू, इंजन, कैंची आदि। **(घ)** जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन हो जाता है, उन्हें विकारी शब्द तथा जो शब्द प्रत्येक परिस्थिति में अपरिवर्तनीय रहते हैं, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। **(ङ) समानार्थी या पर्यायवाची शब्द**–जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं; जैसे–**कमल**–जलज, नीरज, अंबुज, अरविंद आदि। **हाथी**–हस्ति, कुंजर, गज, मतंग आदि। **विलोमार्थी या विलोम शब्द**–जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करें, उन्हें विलोमार्थी या विलोम शब्द कहते हैं; जैसे-डर-निडर, एक-अनेक, विजय-पराजय आदि। **(च) एकार्थी शब्द**–जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जाता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे–पुस्तक, नर, मित्र, वस्त्र आदि। **अनेकार्थी शब्द**–जो शब्द प्रयोग के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अर्थ देते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैस–**हार**-पराजय, आभूषण विशेष, **अर्थ**-धन, मतलब, **कर**-हाथ, सूँड़, टैक्स, **वार**-आक्रमण, दिन।

अभ्यास–5 शब्द-भंडार

अभ्यास-1

1. फूल–कुसुम, पुष्प, प्रसून; **सूर्य**–सूरज, सूर्यदेव, भास्कर; **अनुपम**–अपूर्व, अद्‌भुत, अनूठा; **सरस्वती**–भारती, भाषा, महाश्वेता; **हाथी**–गज, गजेंद्र, करि; **गणेश**–एकदैत, गजवदन, गजानन; **गंगा**–अलकनंदा, सुरपगा, मंदाकिनी **2.** (क) तोय (ख) अजर (ग) राकेश (घ) गज (ङ) जलधर

अभ्यास-2

1. (क) निद्रा (ख) मुक्ति **2.** अपमान, अपकर्ष, अस्थिर, अक्षम, अवगुण, कुसंगति, अधिक, अधम, निराकार, दीर्घ, अनिच्छा, अरूचि।

अभ्यास-3

कुल–परिवार, वंश, सब; **पद**–प्रकण, फूट, रहस्य; **जड़**–मूर्ख, मूल, निर्जीव; **गुरु**–भारी, शिक्षक, श्रेष्ठ; **अरुण**–सूर्य, लाल; **नायक**–नेता, अभिनेता, पथयदर्शक; **कृष्ण**–काला, श्रीकृष्ण; **वार**–दिन, आक्रमण, प्रहार

अभ्यास-4

1. (क) **अवधी**-एक भाषा, **अवधि**-निश्चित समय (ख) **इतर**-अन्य, दूसरा **इत्र**-सुगंधित पदार्थ (ग) **अंतर**-हृदय, **अंदर**-भीतर (घ) **जलद**-बादल, **जलज**-कमल

अभ्यास-5

1. (क) मध्याह्न (ख) परीक्षक (ग) अशक्त **2.** (क) परीक्षार्थी (ख) पाठक (ग) धर्मनिष्ठ (घ) भाग्यशाली (ङ) वक्ता (च) असंभव

अभ्यास-6

1. (क) **अस्त्र**-वह हथियार जो हाथ से फेंककर चलाया जाए; जैसे-बाण। **शस्त्र**-जो हथियार निकट से हाथ में पकड़े-पकड़े चलाया जाए; जैसे- तलवार, गदा। (ख) **ग्रंथ**-महत्वपूर्ण पुस्तक, **पुस्तक**-कोई भी किताब (ग) **दया**-दु:ख से द्रवित होना, **कृपा**-दु:ख दूर करने की सामर्थ्ययुक्त दया। (घ) **निर्णय**-फ़ैसला, **न्याय**-न्याय (ङ) **दु:ख**-सामान्य पीड़ा। **कष्ट**-किसी कार्य से होने वाली पीड़ा। (च) **मित्र**-समवयस्क जो अपने प्रति स्नेह रखता हो। **सखा**-साथ रहने वाला समवयस्क

अभ्यास-6 उपसर्ग

1. (क) उपर्युक्त सभी (ख) (i) व (iii) (ग) पुन: **2.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **3.** (क) अत्यंत (ख) प्रत्येक (ग) दुस्साहस (घ) निर्दोष **4. उपसर्ग**-(क) अ (ख) अनु (ग) अधि (घ) अब (ङ) दुर्; **मूल शब्द**-(क) ज्ञान (ख) करण (ग) कार (घ) गुण (ङ) दशा **5. उपसर्ग वाले शब्द**-निर्दोष, अधर्म, सहर्ष, कमजोर, दुर्दशा **6.** व **7.** स्वयं करें **8.** अप, बद, दर, प्र, बे, अ, चौ, निर्, कु, सु, हर, प्र **9.** (क) मूल शब्दों से पहले अथवा आगे जो शब्दांश लगाए जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं;
जैसे-

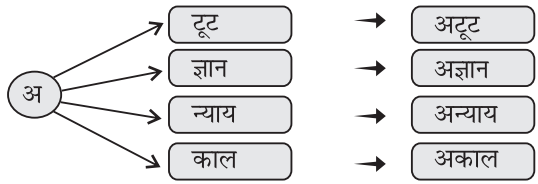

(ख) उपसर्गों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है- 1. संस्कृत के उपसर्ग 2. हिंदी के उपसर्ग 3. उर्दू के उपसर्ग 4. संस्कृत के अव्यय (उपसर्ग के रूप में)।

अभ्यास–7 प्रत्यय

1. (क) ऊ (ख) इया (ग) आलू **2.** पढ़ाकू, चिकनाई, फलदार, दिनभर, दो, बुढ़ापा, प्रमुता, पंजाबी, चलान, मिलान **3. मूल शब्द**-शक्ति, नौकर, देव, बच **प्रत्यय**-शाली, आनी, त्व, पन **4.** स्वयं करें। **5.** (क) जो शब्दांश मूल शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते है। जैसे-

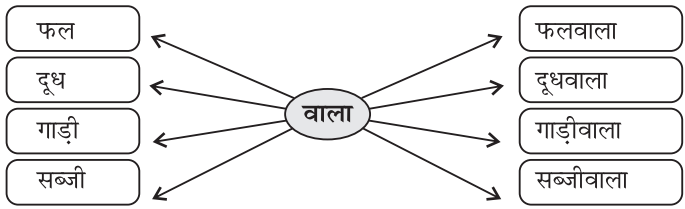

(ख) **कृत् प्रत्यय**–जो प्रत्यय क्रिया की धातुओं के अंत में लगते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। इनसे बनने वाले शब्दों को कृदंत कहते हैं। **तद्धित प्रत्यय**–जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। इनसे बनने वाले शब्दों को तद्धितांत कहते हैं।

अभ्यास–8 समास

1. (क) चतुर्भुज (ख) सर्वप्रिय (ग) रात-दिन (घ) नीलकमल (ङ) यथाशक्ति **2.** (क) दूसरा (ख) पूर्व (ग) समास (घ) द्विगु **3.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓ **4.** (क) **विग्रह**-राजाओं में श्रेष्ठ (ख) आज्ञा के अनुसार (ग) पाप या पुण्य (घ) कमल के समान चरण **समास**-अव्ययीभाव, अव्ययीभाव, द्वंद्व, कर्मधारय **5.** (क) **समस्त-पद**–पीतांबर, प्रतिदिन, चंद्रमुख, नवरात्रि, युद्धभूमि **समास का नाम**-बहुब्रीही, अव्ययीभाव, कर्मधारय, द्विगु, तत्पुरूष **6. स्वंय करें। 7. (क)** दो या अधिक शब्दों से मिलकर जब एक पद बनता है तो वह समास या समस्त पद कहलाता है। समास के छह भेद हैं–1. तत्पुरुष समास, 2. कर्मधारक समास 3. द्विगु समास 4. द्वंद्व समास 5. अव्ययीभाव समास 6. बहुब्रीहि समास **(ख) कर्मधारय समास**–जिस समास का दूसरा पद प्रधान हो और दोनों पदों में विशेष्य-विशेषण या उपमेय-उपमान का संबंध हो, वह कर्मधारय समान्य कहलाता है। **बहुब्रीहि समास**–जिस समास में कोई पद प्रधान न हो तथा समस्त शब्द (पद) किसी अन्य अर्थ का बोध कराते हो, उसे बहुब्रीहि समास कहा जाता है।नीचे लिखे शब्दों को

पढ़िए–नीलकंठ (नील + कंठ) पीतांबर (पीत + अंबर) दशानन (दश + आनन) **(ग)** जिस समास में दूसरा शब्द (पद) प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–1. राजा का पुत्र-राजपुत्र 2. हवन के लिए सामग्री-हवन-सामग्री **(घ)** तत्पुरुष समास के छह भेद हैं–1. कर्म तत्पुरुष 2. करण तत्पुरुष 3. संप्रदान तत्पुरुष 4. अपादान तत्पुरुष 5. संबंध तत्पुरुष 6. अधिकरण तत्पुरुष

अभ्यास–9 संज्ञा

1. (क) जातिवाचक संज्ञा (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ग) मिट्टी **2.** (क) मित्रता (ख) आलस, सफलता (ग) कठिनाई, चढ़ाई (घ) भूख, प्यास (ङ) थकान, खोद (च) पहनावा, व्यक्तित्व (छ) घबराहट, विस्तार (ज) स्वास्थ्य **3.** व **4.** स्वयं करें। **5. (क)** किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। 1.भारत की राजधानी दिल्ली है। 2. सेब में मिठास है। 3. आगरा में बनी इमारत ताजमहल बहुत खूबसूरत है। यहाँ भारत एवं दिल्ली स्थान के नाम हैं। सेब फल का नाम है। मिठास गुण का नाम है। इसी प्रकार आगरा स्थान का नाम है तथा ताजमहल वस्तु के नाम को प्रकट कर रहा है। ये सभी शब्द व्याकरण के अंतर्गत संज्ञा कहलाते हैं। **(ख) 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा**–किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे– (क) जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। (ख) तुलसीदास ने रामचरितमानस नामक काव्य लिखा। (ग) कुतुब मीनार दिल्ली में है। **2. जातिवाचक संज्ञा**–जिस शब्द से वस्तुओं अथवा प्राणियों की संपूर्ण जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– (क) सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। (ख) जंगल में बहुत-से पशु-पक्षी रहते हैं। (ग) इस नगर में कई प्रसिद्ध इमारतें हैं। **(ग) द्रव्यवाचक संज्ञा–** जिन संज्ञा शब्दों से किसी द्रव्य या पदार्थ आदि का बोध होता है; उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा के नाम से जाना जाता है; जैसे–1. सुमन ने सोने की अँगूठी खरीदी। 2. विनीत प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठा है। इन उदाहरणों में 'सोने' तथा 'प्लास्टिक' द्रव्यवाचक संज्ञा कही जा सकती हैं। स्टील, लोहा, सोना, चाँदी, लकड़ी, ऊन, पेट्रोल, घी, जल आदि द्रव्यवाचक संज्ञा के अंतर्गत ही आती हैं। **समूहवाचक संज्ञा–** जो संज्ञा शब्द किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं, उन्हें समूहवाचक संज्ञा के नाम से जाना जाता है; जैसे–1. बच्चे कक्षा में बैठकर पढ़ रहे हैं। 2. मैदान में भीड़ जमा है। (घ) **भाववाचक संज्ञा**–जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के गुण-दोष, दशा, अवस्था, स्थिति, स्वभाव आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहा जाता है।

अभ्यास–10 लिंग

1. (क) कवयित्री (ख) नातिन (ग) सेठानी **2.** (ग) (✗) (च) (✗) (झ) (✗) **3. लिंग**–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग। **4., 5.** और **6.** स्वयं करें। **7. (क)** शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। **(ख)** लिंग दो प्रकार के होते हैं–1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग **(ग) पुल्लिंग**–शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष होने का बोध हो उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–शेर, चूहा, बल्ला, मानव, हाथी, डंडा आदि। **(घ) स्त्रीलिंग**–शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री होने का बोध हो उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–शेरनी, हथिनी, नारी, सीता, चुहिया, गेंद, फुटबॉल आदि।

अभ्यास–11 वचन

1. (क) चाचियों (ख) आँखें (ग) रानियाँ (घ) पत्नियाँ **2.** (क) अभिनेता (ख) आँसूएँ (ग) घोड़ियों (घ) बच्चे (ङ) लड़कियाँ (च) योद्घागण (छ) मछली (ज) लड़के **3.** व **4. स्वयं करें। 5. (क)** एक या अनेक होने का बोध कराने वाले शब्द को वचन कहते हैं। **(ख)** हिंदी में दो वचन होते हैं–एकवचन और बहुवचन। **(ग) एकवचन**–शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं। **(घ) बहुवचन**–शब्द के जिस रूप में उसके अनेक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। **(ङ)** 1. आदर प्रकट करने के लिए एकवचन का बहुवचन के रूप में प्रयोग किया जाता है; जैसे–(क) गुरुजी पढ़ा रहे हैं। (ख) मेरे पिताजी आए हैं। (ग) शादी में भाई साहब जाएँगे। 2. अपने सम्मान के लिए कुछ लोग 'मैं' की जगह 'हम' का प्रयोग करते हैं; जैसे– मोहन ने कहा–हम अकेले जा रहे हैं। 3. अपने से बड़ों के लिए 'आप' व अपने से छोटों के लिए 'तू' की जगह 'तुम' का प्रयोग किया जाता है; जैसे–(क) भैया जी ! आप कहाँ जा रहे हैं? (ख) मोहन ! तुम कहाँ जा रहे हो?

अभ्यास–12. कारक

1. (क) को (ख) से (ग) पर **2.** (क) लड़कियों (ख) बच्चे (ग) गुरुओं **3.** (क) संबोधन (ख) अपादान (ग) अधिकरण (घ) अधिकरण (ङ) कर्ता **4. (क)** संज्ञा या सर्वनाम का जो रूप क्रिया अथवा अन्य किसी शब्द से संबंध स्थापित करे, उसे कारक कहते हैं। **(ख)** 1. **कर्ता कारक**–ने, 2. **कर्म कारक**–को 3. **करण कार**–से, के द्वारा, द्वारा, 4. **संप्रदान कारक**–के लिए 5. **संप्रदान कारक**–से (पृथकता) 6. **संबंध कारक**–का, के, की 7. **अधिकरण कारक**–में, पर 8. **संबोधन**

कारक-हे!, अरे! **(ग) करण कारक**–क्रिया जिस साधन से होती है, उसे करण कारक कहते हैं। इसके चिह्न 'से', 'के द्वारा', 'द्वारा' हैं; जैसे–(क) पिताजी गाड़ी से आए हैं। (ख) उसने रस्सी को चाकू के द्वारा काटा। **अपादान कारक**– जो संज्ञा या सर्वनाम क्रिया के साथ अलगाव प्रकट करता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'से' है; जैसे– (क) छात्र स्कूल से आया है। (ख) पत्ता पेड़ से गिरा है।

अभ्यास–13. सर्वनाम

1. (क) पुरुषवाचक (ख) संबंधवाचक (ग) अनिश्चयवाचक (घ) उत्तम पुरुषवाचक **2.** (क) अपना (ख) किसी की (ग) कौन (घ) वही (ङ) कुछ **3.** व **4.** स्वयं करें।

अभ्यास–14 विशेषण

1. (क) परिश्रमी (ख) भोले (ग) हरी-भरी (घ) बली (ङ) पक्की **2.** (क) मिठास (ख) कड़वाहट (ग) सफ़ेदी (घ) भीतरी **3.** स्वयं करें। **4. विशेषण**–(क) अड़ियल (ख) अनुभवी (ग) सम्मानित (घ) मानसिक (ङ) सुंदर (च) बुद्धिमान (छ) दो; **विशेष्य**–(क) घोड़ा (ख) डॉक्टर (ग) व्यक्ति (घ) पीड़ा (ङ) फूल (च) लड़का (छ) फल **5.** (क) शीला शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखती है। (ख) मेरी अम्मा, कब आईं। (ग) आज मूसलाधार वर्षा होगी। (घ) मैंने अपनी पुस्तक पढ़ ली है। (ङ) गंगा बड़ी नदी है। **6. (क)** विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। **(ख)** विशेषण के भेद हैं–गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक। **(ग) गुणवाचक विशेषण**–किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, आकार, स्वाद आदि की विशेषता बताने वाले शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–1. सामने ऊँची कुतुब मीनार खड़ी थी।–(आकार) 2. यह पीली साड़ी माँ की है।–(रंग) (ग) मीठे आमों का मौसम आ गया।–(स्वाद) **(घ) व्यक्तिवाचक विशेषण**–व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बने विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–बनारसी साड़ी, जापानी घड़ी, पंजाबी नृत्य, इलाहाबादी अमरूद आदि।

अभ्यास–15 क्रिया

1. (क) (i) व (ii) दोनों (ख) दो (ग) अकर्मक (घ) सकर्मक (ङ) दो **2.** (क) नई पुस्तक (ख) दूध (ग) मेरे मित्रों (घ) छात्रों को प्रश्नों के उत्तर (ङ) मुझे चित्र

3. (क) क्रिया (ख) अकर्मक (ग) कर्म (घ) दो **4.** स्वयं करें। **5.** (क) द्वि कर्मक (ख) एककर्मक (ग) एक र्मक (घ) द्विकर्मक (ङ) द्विकर्मक **6. (क)** जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या किए जाने का या किसी व्यक्ति, वस्तु की स्थिति का या किसी घटना के घटित होने का बोध होता है, उन्हें 'क्रिया' कहा जाता है। **(ख)** कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद किए गए हैं–1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया **1. अकर्मक क्रिया**–वाक्य में जो क्रिया कर्म की अपेक्षा नहीं रखती, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे–(i) बालिका हँस रही है। (ii) बालक सो रहा है। 2. **सकर्मक क्रिया**–जिन क्रियाओं के साथ कर्म होता है, उन क्रियाओं को सकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे–(i) पिताजी पत्र लिख रहे हैं। (ii) बालक तबला बजा रहा है। (ग) 1. **एककर्मक क्रिया**–ऐसी क्रिया जिसके साथ केवल एक कर्म का प्रयोग हुआ हो; एककर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे– बच्चे पटाखे खरीदते हैं। (वाक्य में 'पटाखे' कर्म है; अतः क्रिया 'खरीदते हैं' एककर्मक है। 2. **द्विकर्मक क्रिया**– ऐसी क्रिया, जिसके साथ दो कर्म का प्रयोग किया जाता है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे-राकेश ने मुझे गणित पढ़ाया। (वाक्य में 'मुझे' और 'गणित'-दो कर्म का प्रयोग हुआ है, अतः क्रिया-'पढ़ाया'-द्विकर्मक है।)

अभ्यास–16 काल

1. (क) भविष्यत् काल (ख) भविष्यत् काल (ग) भूत काल (घ) वर्तमान काल (ङ) वर्तमान काल **2.** (क) वे कल आने वाले थे। (ख) मंत्री जी प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। (ग) रीता कंप्यूटर सीखेगी। (घ) बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं। **3.** स्वयं करें। **4.** (क) भविष्यत् काल (ख) भूत काल (ग) वर्तमान काल **5.** स्वयं करे। **6. (क)** क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चलता हो, उसे काल कहते हैं। (ख) क्रिया का वह रूप जिससे कार्य के जारी रहने का बोध होता है, **वर्तमान काल** कहलाता है; जैसे–(i) पक्षी दाना खाते हैं। (ii) शिक्षक छात्रों को पढ़ा रहे हैं। क्रिया का वह रूप, जिससे कार्य के बीते हुए समय में समाप्त होने का पता चलता है, **भूतकाल** कहलाता है; जैसे–(क) हम नैनीताल गए थे। (ख)हमने खाना खा लिया। (ग) कक्षा में बच्चे शोर मचा रहे थे।

अभ्यास–17 अविकारी शब्द

1. (क) चार (ख) विस्मयादिबोधक (ग) से आगे (घ) तथा **2.** (क) और (ख) क्योंकि (ग) या (घ) कि (ङ) इसलिए **3.** (क) यहाँ (ख) अंदर (ग) प्रतिदिन

(घ) अचानक (ङ) अधिक **4.** (क) से बाहर (ख) से पहले (ग) के ऊपर (घ) के सामने (ङ) के मारे **5.** स्वयं करें।

अभ्यास–18 निपात

1. (क) भी (ख) तक (ग) मात्र (घ) ही **2.** स्वयं करें।

अभ्यास–19 पद-परिचय

1. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (i) **2.** स्वयं करें।

अभ्यास–20 वाक्य

1. (क) सरल वाक्य (ख) सरल वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य (ङ) मिश्रित वाक्य **2.** (क) वह (ख) तिरुक्कुरल (ग) बहादुरशाह ज़फ़र (घ) राजा साहब (ङ) भारत **3.** व **4.** स्वयं करें। **5. (क)** शब्दों के क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं जैसे–1. ताजमहल आगरा में है। 2. गरिमा निबंध लिख रही है। 3. पिताजी बाज़ार गए हैं। **(ख) उद्देश्य**–वाक्य में विषय में कुछ बात कही जाए, वह उद्देश्य कहलाता है; जैसे–1. चंद्रशेखर वेंकटरमन को नोबेल पुरस्कार मिला। 2. रानी लक्ष्मीबाई प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर सेनानी हैं। विधेय-वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। **(ग) संयुक्त वाक्य**–जिस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतंत्र रूप से समुच्चयबोधक द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहा जाता है। 1. मोर नाच रहा है परंतु मोरनी चुपचाप बैठी है। 2. टॉम कविता पढ़ता है और अज़हर चित्र बनाता है। इन वाक्यों में दो वाक्य स्वतंत्र रूप से 'परंतु' तथा 'और' समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े हैं। ऐसे वाक्यों को संयुक्त वाक्य कहा जाता है। **मिश्रित वाक्य**–जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो तथा अन्य वाक्य आश्रित या गौण हों, वह मिश्रित वाक्य कहलाता है; जैसे–1. मैंने देखा, कि बंदर पेड़ पर लटक रहा है। 2. केशव मेरे घर नहीं आया क्योंकि वह सुबह से पढ़ रहा है। **(घ)** अर्थ की दृष्टि से वाक्य निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं–1. विधानवाचक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. निषेधात्मक या नकारात्मक वाक्य 4. संकेतवाचक वाक्य 5. इच्छावाचक वाक्य 6. विस्मयवाचक वाक्य 7. प्रश्नवाचक वाक्य 8. संदेहवाचक वाक्य **(ङ) आज्ञावाचक वाक्य**–जिस वाक्य से आज्ञा, आदेश या विनय आदि का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे– (i) यहाँ से तुरंत चले जाओ। (आज्ञा/आदेश) (ii) कृपया कल फिर दर्शन

दीजिए। (विनय) **इच्छावाचक वाक्य**–जिस वाक्य से इच्छा, आशीर्वाद, शुभकामना आदि का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे– (i) आपका जीवन सुखी हो। (शुभकामना/ आशीर्वाद) (ii) बेटे! भगवान तुम्हारा भला करें। (इच्छा)

अभ्यास–21 सामान्य अशुद्धियाँ

1. (क) हिंदु (ख) उदेश्य (ग) स्लोक (घ) (ङ) परिक्षा **2.** स्वयं करें। **3.** (क) अतिथि (ख) वनस्पति (ग) विकास (घ) पूजनीय (ङ) आशीर्वाद (च) सौंदर्यता (छ) श्रीमती (ज) परीक्षा (झ) शताब्दी (ञ) कल्याण (ट) उज्जव (ठ) मुश्किल **4.** स्वयं करें।

अभ्यास–22 मुहावरे

1. (क) चुरा लेना (ख) पराजय स्वीकार कर लेना (ग) बेअसर (घ) बदल जाना (ङ) अपनी प्रशंसा स्वयं करना। **2.** (क) टका-सा जवाब देना (ख) कान काटना (ग) खून खौलना (घ) मक्खी मारना (ङ) हथियार डालना (च) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (छ) अक्ल पर पत्थर पड़ना (ज) अगर-मगर करना (झ) खिल्ली उड़ाना (ञ) ठोकर लगना (ट) चिकना घड़ा (ठ) भीगी बिल्ली बनना **3.** (क) डर जाना (ख) खाक में मिला देना (ग) क्रोध की ओर बढ़ाना (घ) बहुत तेज दौड़ना (ङ) मूर्ख बनाना (च) दु:ख को चुपचाप सह लेना (छ) अत्यंत प्रसन्न होना (ज) अपनी हानि स्वयं करना (झ) किसी पर दोष लगाना। (ञ) धोखा देना (ट) पलटी मारना (ठ) घबरा जाना। **4.** (क) चोटी एक कर दिया। (ख) का जवाब पत्थर से दिया। (ग) अंग मुस्काने लगा। (घ) शर्म से झुक गई। (ङ) सिर पर उठा लिया। (च) उल्लू सीधा करते हैं। (छ) पर पत्थर पड़ जाते है। (ज) गुड़ गोबर कर दिया। (झ) न मिला पा रहा था। (ञ) खुल गई। (ट) काटता है। (ठ) कीड़े होते हैं। **5.** स्वयं करें। **6.** (क) जब कोई वाक्यांश अपने शाब्दिक रूप का परित्याग कर किसी लाक्षणिक अर्थ की सृष्टि करता है, तब उसे मुहावरा कहते हैं। (ख) मुहावरा 'वाक्यांश' होता है, पूरा वाक्य नहीं। इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं बल्कि वाक्य के प्रारंभ में, बीच में या अंत में किया जाता है। इससे विशेष अर्थ का बोध होता है।

अभ्यास–23 लोकोक्तियाँ

1. (क) प्रसिद्धि के अनुरूप गुण नहीं (ख) अपराधी-द्वारा निर्दोष पर दोष लगाना। (ग) स्वार्थी लोगों के सामने अपनी कठिनाई बताने से कोई लाभ नहीं होता। (घ) अपनों को ही लाभ पहुँचाना। (ङ) मूर्ख व्यक्ति गुणों की पहचान नहीं कर सकते। (च) मूर्खों में थोड़े ज्ञान वाला व्यक्ति भी आदर पा जाता है। (छ) ओछा व्यक्ति

अधिक इतराता है। (ज) थोड़े गुण वाला व्यक्ति अधिक घमंड करता है। **2.** (क) जाको राखै साइयाँ मार सके न कोय। (ख) ऊँची दुकान फीका पकवान। (ग) (घ) अंधे के आगे रोए, अपने नैना खोए। (ङ) अकेला चना माड़ नहीं फोड़ सकता। **4.** (क) लोकोक्ति शब्द का अर्थ है-लोक में प्रसिद्ध उक्ति या कथन। (ख) लोकोक्ति व्यापक लोक-अनुमानों पर आधारित कथन होता है जिसका प्रयोग-1. किसी बात का समर्थन करने के लिए 2. किसी बात का विरोध करने के लिए 3. किसी को शिक्षा देने के लिए 4. किसी को चेतावनी देने के लिए 5. किसी पर व्यंग्य करने के लिए किया जाता है।

अभ्यास–24 विराम-चिह्न

1. (क) प्रश्नवाचक (ख) योजक (ग) अर्ध विराम (घ) विस्मयादिबोधक (ङ) अल्पविराम (च) कोष्ठक **2.**, **3.** और **4.** स्वयं करें। **5.** (क) विराम-चिह्न का शाब्दिक अर्थ होता है- रुकना या ठहरना। जब हम अपने भावों को भाषा द्वारा व्यक्त करते हैं; तब एक भाव की अभिव्यक्ति के बाद कुछ देर रुकते हैं, इस रुकने को ही विराम कहते हैं और इसके लिए हम जिस चिह्न का प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। (ख) **निर्देशक चिह्न (–)**– आगे आने वाले शब्द या कथन की ओर संकेत करने के लिए निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे– बुद्ध ने कहा–अपने दीपक स्वयं बनो। **योजक चिह्न (-)**–दो शब्दों को जोड़ने वाला चिह्न योजक कहलाता है; जैसे–मैं दिन-रात अपने माता-पिता की सेवा करता रहूँगा।

खंड–ख : रचना–स्वयं करें।

अलंकार हिंदी व्याकरण

Interactive Resources

- Download the free app 'Green Book House' from google play.
- Free online support available on 'www.greenbookhouse.com'.
- Ample teacher's support available.

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com